

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - अष्टम

दिनांक -30 - 10 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक - पंकज कुमार

सुप्रभात् बच्चों आज कैकेई का अनुताप नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

- यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।”  
चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी-स्वर को।  
सबने रानी की ओर अचानक देखा,  
वैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा।  
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा,  
वह सिंही अब थी हहा! गोमुखी गंगा-  
हाँ, जनकर भी मैंने न भरत को जाना,  
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना  
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,  
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।

शब्दार्थ अटल-जो टलने वाला न हो, स्थिर वैधव्य-विधवापन:

तुषारावृता- कुहरे से ढकी हुई; विध-लेखा-चन्द्रमा की रेखा, चाँदनी. अचल-स्थिर;  
असंख्यतरंगा-अनगिनत लहरों वाली; सिंही-सिंहनी: हहा-दीनता का भाव पूर्ण; गोमुखी-गाय  
के मुख वाली; जनकर-जन्म देकर; अपराधिन-दोषी।

सन्दर्भ पूर्ववत्।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश में राम की बात सुनकर माता कैकेयी स्वयं को  
दोषी सिद्ध करती हुई उनसे अयोध्या लौटने की बात कहती हैं।

व्याख्या राम की इस बात को सुनकर कि भरत को स्वयं उसकी  
माता भी न पहचान सकी, कैकेयी कहती हैं कि यदि यह सच है, तो अब तम अपने घर लौट

चलो अर्थात् मेरी उस मूर्खता को भूलकर अयोध्या। चलो. जिसके परिणामस्वरूप मैंने तुम्हारे लिए वनवास की माँग की थी।

कैकेयी के मुख से दृढ़ स्वर में कही गई इस बात को सुनकर सब विस्मित रह गए और अचानक उनकी ओर देखने लगे। उस समय विधवा रूप में श्वेत वस्त्र धारण कर वे ऐसी प्रतीत हो रही थीं मानो कुहरे ने चाँदनी को ढक लिया हो। स्थिर बैठी होने के पश्चात भी उनके मन में विचारों की अनगिनत तरंगें उठ रही थीं। कभी सिंहनी-सी प्रतीत होने वाली रानी कैकेयी आज दीनता के भावों से भरी थीं। आज वह गंगा के सदृश शान्त, शीतल और पावन थीं।

कैकेयी आगे कहती हैं कि सभी लोग सुन लें-मैं जन्म देने के पश्चात् भी भरत को न पहचान सकी। अभी-अभी राम ने भी इस बात को स्वीकार किया है। वह राम से कहती हैं कि यदि तुम्हारी कही बात सच है तो तुम अयोध्या लौट चलो। अपराधिनी मैं हूँ, भरत नहीं। तुम्हें वन में भेजने का अपराध मैंने किया है। इसके लिए मुझे जो दण्ड चाहो दो, मैं उसे स्वीकार कर लूँगी, परन्तु घर लौट चलो, अन्यथा लोग भरत को दोषी मानेंगे।